SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

लोकगीत के माध्यम से पूर्वी उत्तर-प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर का अध्ययन: कजरी के विशेष सन्दर्भ में

DR. PRADEEP KUMAR

Assistant Professor, Institute of Media Studies, Shri Ramswaroop Memorial University, Lucknow-Deva Road, Uttar Pradesh

सार

हर समुदाय, चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, अपने गीतों का एक मूल्यवान संग्रह रखता है। इन गीतों की सामग्री और शैली अलग-अलग समुदायों, स्थानों और विभिन्न समय अवधियों के बीच भिन्न होती है। उदाहरण के लिए, नाविकों, श्रमिकों, फसलों को काटने वालों, कढ़ाई करने वालों, दूधवाले और वे लोग जो अनाज पीसने, धान रोपने या उबटन करने जैसे कार्यों में लगे होते हैं; उनके पास काम करते समय गाने के लिए विशिष्ट गीत होते हैं। इसके अलावा, जन्म के समय या जैसे पवित्र धागा संस्कार, और विवाह संबंधित विभिन्न समारोहों के दौरान महिलाएं जो विवाह गीत गाती हैं। ये सभी लोक संगीत की श्रेणी में आते हैं। लोकगीत किसी भी जीवंत संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह एक अलिखित परंपरा के रूप में कार्य करता है जो समाज की संरचनाओं को शासित करने वाले अनौपचारिक सामाजिक बलों को प्रतिबिंबित करता है। लोककथा का अभिन्न हिस्सा होने के नाते, यह मानव और प्रकृति के बीच के संबंध के साथ-साथ जीवन के विभिन्न चरणों में मानव व्यवहार को व्यक्त करता है। लोकगीत न केवल एक समुदाय के सामाजिक-सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी प्रदान करता है, बल्कि यह मानव मनोविज्ञान और एक व्यक्ति के अपने सांस्कृतिक रूप से आकारित वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने की प्रक्रिया को भी उजागर करता है। मूल रूप से, यह समाज की जटिल सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता को प्रकट करता है। प्रस्तुत अध्ययन में लोकगीत के माध्यम से पूर्वी उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहरों का गहन अध्ययन-विशेषण करने का प्रयास किया गया है, जो किसी भी समाज के भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास के लिए सांस्कृतिक धरोहर की दृष्टि से आवश्यक है।

मुख्य शब्द : *लोक संस्कृति, लोकगीत, कजरी, सामाजिक व्यवस्था, मानसिकता, लोक धारणाएँ।*

परिचय

लोककला का अध्ययन एक समुदाय के विचारों, आदर्शों, आशाओं, डर, आकांक्षाओं और अंधविश्वासों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है। भारत, अपनी प्राचीन सभ्यता के साथ, लोककला का खजाना है, जिसमें सांस्कृतिक धरोहर, मिथक, किंवदंतियाँ, लोककाव्य और एक ऐसी धरोहर शामिल है जो पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होती रही है। लोककला समाज की पृष्ठभूमि का एक विश्वसनीय और सार्थक प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है, जो देश की भाषाई, धार्मिक, क्षेत्रीय और कालिक विविधताओं के बावजूद सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देती है। लोककला एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक तत्व है जो समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणालियों, विश्वासों, मूल्यों और दृष्टिकोणों को उजागर करती है। यह लोकगीतों, नृत्यों, तालों, मुहावरों, पहेलियों, किंवदंतियों, उपकथाओं, तंत्र-मंत्र, मेलों, त्योहारों, धार्मिक प्रथाओं, अंधविश्वासों, रीति-रिवाजों और परंपराओं के माध्यम से व्यक्त होती है। इसका क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है, जो मानव अनुभवों का समृद्ध संग्रह प्रस्तुत करता है। एक मौखिक परंपरा के रूप में, इसे सामाजिककरण की प्रक्रिया के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।

भारतीय संगीत में, लोकगीतों को लोक-गिती या लोक संगीत भी कहा जाता है। ये गीत अक्सर सिर्फ तीन या चार स्वरों में गाए जाते हैं और कड़े नियमों से बंधे नहीं होते, जिससे इनमें स्वतंत्रता का अहसास होता है, जैसे एक पक्षी खुले आसमान में उड़ता है; आनंदित, हल्का और बिना किसी बंधन के। उत्तर प्रदेश, जो अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, हमेशा से ही कला का एक प्रमुख केंद्र रहा है और इसने अनेको ऐसे कवियों, नर्तकों, लेखकों, नाटककारों और संगीतकारों को जन्म दिया है जिन्होंने साहित्यिक और कलात्मक क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त की है। यह राज्य लंबे समय से संगीत का प्रेमी रहा है और चूंकि इसका अपना कोई लिपि नहीं है, इसके संगीत में निहित सांस्कृतिक परंपराएँ मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी संप्रेषित होती रही हैं। कई बार उत्थान-पतन के बावजूद, कुछ संगीत शैलियाँ जैसे मंदिर संगीत, शिव गायन और लोक संगीत जीवित हैं, जिनकी गहरी भावनात्मक भावना और मानसिक मूल्य उन्हें आज भी जीवित बनाए रखते हैं। ये संगीत परंपराएँ प्राचीन उत्तर प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न और जीवित हिस्सा बनी हुई हैं।

पूर्वी उत्तर प्रदेश अपनी समृद्ध ध्वनि और ताल के लिए भी प्रसिद्ध है, जो इसे अन्य राज्यों एवं क्षेत्रों के संगीत से अलग करता है। इसके संगीत की नजाकत, आकर्षण और सौंदर्य अनमोल है। संगीत हर अवसर का एक अभिन्न हिस्सा है, कोई भी उत्सव या समारोह इसके बिना अधूरा रहता है। चाहे खुशियाँ हों या दुख, संगीत की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उदाहरण के तौर पर, उत्तर प्रदेश की एक लोकधारा "वँन" है, जो शोक के समय गाई जाती है, और यह समुदाय में व्याप्त दुःख को व्यक्त करती है। इस राज्य को अपनी जीवंत और विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर के लिए लंबे समय से सराहा गया है, जो आज भी भारतभर के लोगों की कल्पना को आकर्षित करती है।

पूर्वी उत्तर प्रदेश की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और कलात्मक जीवन, जिसे अक्सर "पृथ्वी पर स्वर्ग" कहा जाता है, ने अनगिनत लेखकों और शोधकर्ताओं को इसके समृद्ध विरासत का विश्लेषण करने के लिए प्रेरित किया है। उदाहरण के लिए, कलहण की *राजतरंगिणी* ने उत्तर प्रदेश के जीवन की सूक्ष्मताओं पर ध्यान आकर्षित किया, और इस क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक गतिशीलता के बारे में जानकारी दी। संगीत, जो स्वाभाविक रूप से एक सहज निर्माण का रूप है, मानव प्रवृत्तियों, भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करता है, इसके सार्वभौमिक आकर्षण के साथ यह आत्मा को ऊँचा करने की शक्ति रखता है। इतिहास में, संगीत ने मानव भावनाओं को व्यक्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य किया है, और यह सभ्यताओं के साथ विकसित होता हुआ व्यापक सांस्कृतिक विकास का हिस्सा बन चुका है।

विभिन्न क्षेत्रों और राष्ट्रों ने अपनी विशिष्ट संगीत और कला रूपों का विकास किया है। जैसे-जैसे सभ्यताएँ प्रगति करती हैं, वैसे-वैसे संगीत का विकास और प्रचार होता है। उत्तर प्रदेश में, हिंदू काल के संगीत ने भारतीय संगीत को व्यापक रूप में परिलक्षित किया। प्राचीन ग्रंथ जैसे *नीलमत पुराण* और *राजतरंगिणी* यह संकेत करते हैं कि उत्तर प्रदेश खासकर पूर्वी क्षेत्र का संगीत भारतीय परंपराओं के साथ गहरे रूप से जुड़ा हुआ था। यह क्षेत्र लंबे समय से प्रसिद्ध संगीतकारों और कलाकारों का घर रहा है, जिन्होंने भारत के अन्य हिस्सों से मजबूत संबंध बनाए रखा, जिससे भारतीय संगीत के प्रभाव उत्तर प्रदेश की संस्कृति में समाहित हो गए। हालांकि, इस समय में संगीत का लिखित दस्तावेज़ीकरण कम था; संगीतकारों और कलाकारों ने लेखन पर कम ध्यान दिया, जिसके कारण उस समय से कोई औपचारिक रिकॉर्ड या संकेतन आज तक नहीं बचा है।

संगीत, एक मानव चमत्कारी कला के रूप में, समय, भाषा और संस्कृति की सीमाओं को पार करता है। यह कई क्षेत्रों के सामाजिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इस पत्र का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के एक विशिष्ट संगीत शास्त्र, विशेष रूप से प्रसिद्ध भोजपुरी पारंपरिक गीत कजरी का अध्ययन और विश्लेषण करना है। इसका उद्देश्य कजरी के उत्पत्ति और महत्व को समझना और क्षेत्र की विशिष्ट मनोरंजन शैलियों की गहराई से पड़ताल करना है। इसके अतिरिक्त, इन परंपराओं और धार्मिक विश्वासों पर ताजे डेटा संग्रहण पर जोर दिया गया है, और इन निष्कर्षों का मूल्यांकन और तुलना करने का प्रयास किया गया है। द्वितीयक डेटा विभिन्न स्रोतों से संकलित किया गया है, जिसमें पुस्तकालय अनुसंधान, पत्रिकाएँ, किताबें और वेबसाइट्स शामिल हैं।

कजरी शब्द भोजपुरी शब्द "कजरा" या "काजल" से लिया गया है, जो भारतीय उपमहाद्वीप की एक पारंपरिक धुन को संदर्भित करता है, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार से। यह गीत अक्सर एक महिला के अपने प्रेमी के लिए लालसा से जुड़ा होता है, जिसमें वसंत आकाश में घने बादल होते हैं। कजरी पारंपरिक रूप से मानसून के मौसम में गाई जाती है, और इसकी शैली अन्य क्षेत्रीय लोक रूपों जैसे चैत, होरी और सावनी से मेल खाती है। ये गीत उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से वाराणसी, मिर्जापुर, मथुरा, इलाहाबाद और बिहार के भोजपुरी क्षेत्रों में गाए जाते हैं। भारतीय संगीत का एक समृद्ध और विविध इतिहास है, जिसमें देशभर में विभिन्न बोलियाँ और शैलियाँ हैं। सबसे प्रसिद्ध कजरी गीत भोजपुरी में होते हैं, हालांकि समान गीत अन्य बोलियों जैसे अवधी और मैथिली में भी पाए जाते हैं। कजरी शब्द स्वयं काजल या कोहल से जुड़ा हुआ है, जो उस घने बादलदार आकाश को संदर्भित करता है जो आँखों में काजल के रूप में होता है, यह प्रतीक अक्सर संगीत, काव्य और बॉलीवुड गीतों में प्रयुक्त होता है।

कजरी गीत एक बड़े क्षेत्र में गाए जाते हैं, जिसमें मिर्जापुर को कजरी परंपरा का जन्मस्थल माना जाता है। लोककथा के अनुसार, एक महिला कजली की कहानी है, जिसका पति मानसून के समय दूर था। उनके विलगाव का दुःख असहनीय हो गया और उसने कजल देवी के चरणों में गाकर और रोकर अपना दुःख व्यक्त किया। उसके आँसू और गीत अंततः कजरी शैली में बदल गए। बिहार और उत्तर प्रदेश में कजरी गायन के दो प्रमुख प्रकार होते हैं: एक नाटकीय रूप में प्रदर्शन किया जाता है और दूसरा महिलाएँ वर्षा ऋतु के दौरान गाती हैं, जो अक्सर नृत्य या एक घेरे के साथ होती है, जिसे धुनामुनिया कजरी कहा जाता है। कजरी ने अपार लोकप्रियता प्राप्त की और यह ठुमरी शैली का हिस्सा बन गई, जो 16वीं से 19वीं सदी के बीच फल-फूल रही थी और 20वीं सदी के प्रारंभ में इसका और विकास हुआ। ठुमरी गीत आमतौर पर प्रेम और लालसा के विषयों पर आधारित होते हैं, और कई कजरी गीतों को ठुमरी शैली में अपनाया गया था।

सावन, या मानसून ऋतु, कजरी गीतों का एक प्रमुख विषय है। ये गीत अक्सर तूफान, हरी-भरी हरियाली, बारिश से सने सड़कों की आवाज़ और बारिश के मौसम के वातावरणीय गहरेपन को उत्पन्न करते हैं। *झूला* कजरी संगीत का एक और रूप है, जो विशेष रूप से उत्तर प्रदेश और बिहार में लोकप्रिय है, जहाँ महिलाएँ अपने दोस्तों के साथ इकट्ठा होकर पेड़ों से झूलते हुए गाती हैं। इस गाने की शैली को व्यापक रूप से *झूला संगीत* के रूप में जाना जाता है। *विरह* या प्रेमी से बिछड़ने का एहसास, कजरी गीतों का एक अन्य बार-बार आने वाला विषय है। ये गीत आमतौर पर एक महिला की अपने प्रियतम के लिए लालसा को व्यक्त करते हैं, खासकर मानसून के तूफानी मौसम में।

कजरी के प्रमुख विषयों में अक्सर राधा और कृष्ण जैसी प्रतीकात्मक जोड़ी का उल्लेख होता है, जो दिव्य प्रेमियों का प्रतिनिधित्व करती है—यह एक सामान्य रूपक है जो उत्तर भारतीय कला और संस्कृति में प्रचलित है। अन्य सामान्य विषयों में आम के पेड़, कदंब के पेड़ और झूला (झूलने वाली मशीन) का संदर्भ होता है, जो इन पेड़ों से जुड़े होते हैं। गीतों में उमड़ते बादलों का भी उल्लेख होता है, जिसे उत्तर प्रदेश में "उमड़ घुमड़ बादल" कहा जाता है, और *पपीहा* (एक प्रकार का पक्षी, जिसे अक्सर महिलाओं का साथी माना जाता है) का ज़िक्र भी कजरी गीतों में बार-बार होता है।

लोक संगीत, जैसे कजरी, मुख्य रूप से ग्रामीण समुदायों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है और यह गांवों में सांस्कृतिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा होता है। यह भाषा और संचार कौशल के विकास में मदद करता है, जो आम तौर पर स्थानीय बोलियों में व्यक्त होता है, जिससे यह सभी के लिए सुलभ और साक्षात्कार योग्य हो जाता है। लोक संगीत एक भावनात्मक outlet के रूप में कार्य करता है, जिससे लोग अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं और अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ सकते हैं।

ग्रामीण महिलाओं के लिए, कजरी एक शक्तिशाली अभिव्यक्ति का रूप है। यह उन्हें अपनी भावनाओं, इच्छाओं, प्रेम और व्यक्तिगत अनुभवों को साझा करने का एक तरीका प्रदान करता है। जैसे सभी संगीत, कजरी भी समाज पर भावनात्मक, नैतिक और सामाजिक स्तर पर प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। इसके सुर शांति, खुशी, लालसा या शोक की भावनाएँ व्यक्त करते हैं, और इसके बोल मानव भावनाओं की विस्तृत श्रृंखला को व्यक्त कर सकते हैं, जैसे खुशी से लेकर दुःख, उत्साह से लेकर अपमान, या क्रोध और घृणा तक।

कजरी ग्रामीण महिलाओं की आत्मा को मुक्त करता है, उन्हें गहरे भावनात्मक और शक्तिशाली तरीके से खुद को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। यह उन्हें संचित भावनाओं को बाहर निकालने, आराम करने या उर्जावान महसूस करने का मौका देता है, यह गीत के मूड पर निर्भर करता है। कजरी, अपनी संपूर्णता में, प्रेम और लालसा का गीत है, जो ग्रामीण समुदायों को संगीत की सार्वभौमिक भाषा के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करने और संवाद करने में मदद करता है।

संगीत एक शक्तिशाली संचार माध्यम के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्तियों को अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने और जटिल विचारों को साझा करने का अवसर देता है। यह विशेष रूप से महिलाओं के बीच भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने का एक प्रभावी तरीका है, जिससे लोग एक-दूसरे के बीच जटिल भावनात्मक और बौद्धिक अभिव्यक्तियों को जल्दी से संप्रेषित कर सकते हैं। संगीत केवल एक व्यक्तिगत अनुभव नहीं है, बल्कि यह एक साझा गतिविधि है, जो आपसी संबंध और सहयोग को बढ़ावा देती है। इसके सार्वभौमिक

आकर्षण के माध्यम से, संगीत विशेष जरूरतों वाले व्यक्तियों को भी समर्थन प्रदान कर सकता है, जो संचार के वैकल्पिक तरीकों की पेशकश करता है।

निष्कर्ष

संगीत केवल एक मनोरंजन का स्रोत नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उपयोग विभिन्न जीवन के चरणों और आसपास के वातावरण से संबंधित भावनाओं और मनोभाव को व्यक्त करने के लिए किया जाता है। यह संस्कृति, स्थानीय परंपराओं और समय की यात्रा के साथ विकसित होता है, उत्सवों, संस्कारों, ऋतुओं और अन्य जीवन घटनाओं का सार पकड़ता है। संगीत संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है और इसे एक धरोहर के रूप में देखा जा सकता है जो समाज की पहचान को प्रकट करता है। इसका विकास मानव सभ्यता की प्रगति से गहरे रूप से जुड़ा हुआ है।

कई लोकगीत, जिनमें कजरी भी शामिल है, अपनी सांस्कृतिक महत्ता, सामाजिक गतिविधियों से जुड़ाव और अपनी सरल परंतु सुंदर धुनों के कारण लोकप्रिय हो गए हैं, जो आम जनता और शास्त्रीय संगीतकारों दोनों के दिलों को छूने में सफल रही हैं। समय के साथ, कुछ लोक धुनों को शास्त्रीय रूपों में अनुकूलित किया गया, जिससे उनमें पारंपरिक संगीत तत्वों का समावेश हुआ। इस विकास की प्रक्रिया ने कजरी और अन्य लोक शैलियों को सेमी-शास्त्रीय संगीत के रूप में मान्यता दिलाई है, जो राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँच चुकी है। शोध के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ है कि कजरी संगीत और इसके आसपास की संस्कृति को और अधिक अन्वेषण और संरक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि यह एक अनमोल सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करता है जिसे आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना चाहिए।

सन्दर्भ

http://blog.aaobihar.com/kajari-special-folk-songs

Ghosh, L.N. (1975). Geet Vadyam. Kolkata: Pratap Narayan Ghosh. Ranade, A. D. (1997). Hindustani Music. New Delhi: National Book trust.

Sarma, N. (2016). Addressing pain of women through folk culture: A case study of Bhojpuri diaspora in Mauritius. International Journal of Applied Research, 523-525.

http://indianraga, wordpress.com/tag/kajri/